RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-09
September-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI: https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i09.063

हिलसा का भौगोलिक एवं ऐतिहासिक महत्व

डॉ0 अशोक कुमार,

सहायक प्राध्यापक, भूगोल विभाग, जामताड़ा महिला संध्या महाविधालय,जामताड़ा (झारखण्ड)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 September 2020

Keywords
जुम्मन यति, जलवायु, मिट्टी, वनस्पति

ABSTRACT

हिलसा गंगा के मैदानी भाग में गंगा नदी के दक्षिण में स्थित नालान्दा जिला एक अनुमण्डल मुख्यालय है। यह पटना–फतुहा इसलामपुर रेलमार्ग का मुख्य स्टेशन है। मगध की भूमि पर स्थित हिलसा प्राचीन काल से ही महत्वपूर्ण गाँव के रूप में रहा है।

यह शहर 250 10′ 10′′ उत्तर से 250 12′ 14′ उत्तरी अक्षांश तथा 850 15′ 14′′ पूर्वी देशान्तर के बीच फैला है। इसका कुल क्षेत्रफल 209 वर्ग किलोमीटर है। यहाँ की कुल जनसंख्या 2011की जनगणना के अनुसार 51052 व्यक्ति है जिसमें 27055 पुरूष और 23997 महिलाएँ है। यह नालन्दा जिला मुख्यालय बिहार शरीफ के पश्चिम में स्थित हिलसा नालन्दा जनपद का एक प्रमुख भौगोलिक एवं सांस्कृतिक स्थल है। 9 नवम्बर 1971 ई0 को हिलसा चार प्रखण्डों को मिलाकर अनुमंडल मुख्यालय बनाया गया। हिलसा की अपनी ऐतिहासिक भूमिका है। हजारो वर्ष पूर्व यह नगर हिन्दु और मुस्लिम संस्कृति से संबंधित रहा है जो साम्प्रदायिक सद्भावना की देन है।

इस शहर के नामाकरण के संबंध में अनेक आनन्दायक कथाएँ प्रचलित है। बेगलर तथा कनिधंम जैसे पुरातत्वविदों ने हिलसा देव तथा जुम्मन यति के संबंध में अनेक कथाओं का उल्लेख किया है। जुम्मन यति के संबंध में अनेक कथाओं की उल्लेख किया है। जुम्मन यति एवं हिलसा देव के बीच संघर्ष के क्रम में हिलसा देव की हार हुई एवं जुम्मन यति की जीत हुई।

दुसरी कथा के अनुसार कहा जाता है कि राजगृह से चलते हुए श्री कृष्ण का बड़ा भाई बलराम जिसे हलधर के नाम से जाना जाता था। हिलसा के वर्तमान काली स्थान के निकट एक तालाब है जिसके किनारे अपना हलधरपुर था। जो बाद में चलकर हिलसा के नाम से जाना जाता है।

भौगोलिक संरचना की दृष्टि से हिलसा मध्य गंगा के समतल मैदानी भाग में स्थित एक उपजाऊ मैदानी भाग है। यह एक निक्षेपात्मक मैदान है। दक्षिण की आर से बहने वाली नदियों से वर्षा काल में प्रायः बाढ़ आ जाया करती है। यह

पूरा का पूरा मैदानी भाग बाढ़ के मैदानी भाग में स्थित है। यहाँ की मुख्य नदी फल्गु है। जो अपनी सहायक नदियों के साथ मैदानी भाग में बाढ़ के लिए प्रसिद्ध है।

नालन्दा जिला का यह क्षेत्र मानसूनी जलवायु के अन्तर्गत पड़ता है। यहाँ तीन ऋतुएँ पाई जाती है – जाड़ा, गर्मी एवं बरसात। गर्मी का औसत तापमान 230 सेन्टीग्रेड तथा जाड़े का औसत तापमान 150 सेन्टीग्रेड रहता है। यहाँ औसत वार्षिक वर्षा 150 सेन्टीमीटर से कुछ अधिक होती है। मिट्टी यहाँ की मूल चट्टानां से निर्मित है। यहाँ क्ले मिट्टी पाई जाती है जिसे केवाल के नाम से जाना जाता है। यह मिट्टी बरसात के दिनों में थोड़े ही पानी सोखने पर काफी कीचड़ युक्त हो जाती है। यह मिट्टी काफी उपजाऊ होती है, जिसमें विभिन्न प्रकार के फसल उपजाये जाते हैं। यहाँ मौनसुनी प्रकार की वनस्पति पाई जाती है, जो ग्रीष्म ऋतु के शुरूआत में अपने पत्ते झड़ा देती है। यहाँ की मुख्य सड़क के दोनों और वन के रूप में वृक्षों की प्राधनता है। यहाँ के कुल क्षेत्रफल का 25ः से भी कम क्षेत्र में वनों का विस्तार है। इसलिए यहाँ पुर्नजंगलीकरण की आवश्यकता है। साक्षरता के दृष्टिकोण से यह क्षेत्र काफी आगे हैं। परन्तु अन्य क्षेत्रों की तरह ग्रामीण साक्षरता दर शहरी साक्षरता दर से कम हैं। यहाँ के ग्रामीण जनसंख्या का पलायन गाँव से शहरों की और हो रहा है। इसलिए यहाँ जनसंख्या की समस्या के साथ–साथ शहरी क्षेत्र में जमीन भी काफी मँहगा हो गया है।

अतः यहाँ की भौगोलिक स्थिति को देखते हुए यहाँ की समस्याओं का समाधान करने की आवश्यकता है।

किसी क्षेत्र के विकास में उस क्षेत्र के ऐतिहासिक एवं भोगोलिक महत्व की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रस्तुत शोध पत्र में हिलसा के भोगोलिक एवं ऐतिहासिक महत्व का अध्ययन करना है। हिलसा एक अनुमण्डल मुख्यालय है तथा नालान्दा जिला का एक महत्वपूर्ण शहर है। यह पटना–फतुहा इसलामपुर–गया एवं बिहार शरीफ मुख्यमार्ग से जुड़ा हुआ है। यह 9 नवम्बर 1971 ई0 को हिलसा चार प्रखण्डों को मिलाकर अनुमण्डल मुख्यालय बनाया गया। अनुमण्डल बनने के बाद इस ऐतिहासिक स्थल का उत्तरोत्तर विकास होता

RRIJM 2015, All Rights Reserved

गया। यहाँ की भोगोलिक संरचना एवं धरातलीय स्वरूप में विभिन्नताएँ पायी जाती है परन्तु जलवायविक परिस्थितियाँ अनुकुल होती है। वर्तमान समय में हिलसा के ग्रामीण क्षेत्र से लोगों का पलायन शहरी क्षेत्र की ओर हो रहा है। इसलिए शहरी क्षेत्र की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। खासकर युवा वर्ग पढ़ाई लिखाई एवं रोजी रोजगार के लिए हिलसा शहरी क्षेत्र में आकर बस गये हैं। इसलिए यहाँ जनसंख्या की समस्या के साथ–साथ शहरी क्षेत्र में जमीन काफी मँहगी हो गयी है। इसलिए इन सब समस्याओं की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है।

उद्देश्य :–

1. हिलसा का भोगोलिक एवं सांस्कृतिक महत्व का अध्ययन करना।
2. हिलसा शहर का ऐतिहासिक महत्व का अध्ययन करना।
3. हिलसा शहर में जनसंख्या वृद्धि से सड़कों पर आवागमन में व्यवधान उत्पन्न होता है। इसका भी अध्ययन इस शोध कार्य में करना है।
4. बीता हुआ समय एवं लोकोक्तियों का अध्ययन करना।

विधि तंत्र :–

वर्तमान अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित हैं। प्राथमिक आँकड़ों का संकलन शहर के लोगों से मिलकर प्रश्नावली के आधार पर किया गया है तथा द्वितीयक आँकड़ों एवं तथ्यों की जानकारी के लिए पत्र पत्रिकाओं, शोध ग्रन्थ एवं पुस्तकों का सहयोग लिया गया। इस प्रकार यह शोध पत्र भ्रमण आँकड़ों का संकलन एवं विभिन्न संदर्भ ग्रन्थों पर आधारित है।

अध्ययन क्षेत्र :–

हिलसा मध्यवर्ती गंगा मैदान में गंगा नदी के दक्षिण में स्थित नालान्दा जिला का एक अनुमण्डल मुख्यालय है। यह फतुहा–इसलामपुर–गया सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। इसका अक्षांशीय विस्तार 85^0 10′ 10′′ उत्तर से 25^0 12′ 14′ उत्तरी अक्षांश तथा 85^0 15′ 16′′ पूर्व से 85^0 18′ 14′′ पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है। इसका कुल क्षेत्रफल 209 वर्ग किमी0 है। हिलसा शहर के उत्तर में कराय–परशुराय, दक्षिण में एकंगरसराय, पूरब में थरथरी और पश्चिम में धनरूआ है। हिलसा की आबादी 2011 की जनगणना के अनुसार 51,052 व्यक्ति है जिसमें पुरूषों की संख्या 27055 और महिलाओं की संख्या 23997 है।

तथ्यों का वर्णन :–

नालन्दा जिला मुख्यालय बिहारशरीफ के पश्चिम में स्थित हिलसा नालन्दा जनपद का एक प्रमुख भौगोलिक एवं सांस्कृतिक स्थल है। पटना–गया मुख्य मार्ग पर पटना से 44 किमी दक्षिण तथा गया से 80 किलोमीटर उत्तर इस सांस्कृतिक स्थल की स्थिति है। हिलसा अनुमण्डल मुख्यालय से पूर्व एवं बाजार से दक्षिण पश्चिम कोने पर एक प्राचीन तालाब है जहाँ एक आधुनिक सूर्य मन्दिर निर्मित है। यहाँ छठ व्रत के अवसर पर हजारों नर–नारी उगते एवं डुबते सूर्य देव को अर्ध्य समर्पित करते हैं। इस कारण इस विशाल तालाब का भौगोलिक स्थिति के कारण सांस्कृतिक महत्व दूर–दूर तक फला है।

विवाह के मौसम में यहाँ इस इलाके के ग्रामीण एवं शहरी लोग मंडप बनाकर अपने लड़का लड़कियों का विवाह करना शान तथा धार्मिक कार्य समझते हैं। उस समय यहाँ मेला जैसा दृश्य रहता है। इसी सूर्य मन्दिर के प्रागंण में प्रति शुक्रवार पशु हाट लगता था जिसमें हजारों की संख्या में गाय, बैल एवं भैसा की खरीद बिक्री होती थी, परन्तु साफ सफाई का ख्याल रखते हुए इस पशु हाट को यहाँ से हटा दिया गया है। यहाँ पशु हाट रेलवे स्टेशन के पश्चिम के मैदान में चला गया है जहाँ आज भी शुक्रवार को पशु हाट लगता है तथा पशुओं की खरीद बिक्री होती है। इस सूर्य मन्दिर का तालाब 1600 वर्ग फीट के क्षेत्रफल में फैला हुआ है। तालाब के उत्तर पूर्वी दिशा में श्री चन्द उदासीन महाविद्यालय का विशाल भवन एवं प्रागंण है, जहाँ उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राओं का जमघट लगा रहता है। इस महाविद्यालय के बगल में धर्म, ज्ञान, चरित्र और सद्व्यवहार के प्रेरणाश्रोत भगवान भाष्कर की अराधना रत नर–नारियों का जमाव रहता है।

हिलसा की अपनी ऐतिहासिक भूमिका हैं। हजारों वर्ष पूर्व से ही यह नगर हिन्दु और मुस्लिम संस्कृति से संबंधित रहा है जो साम्प्रदायिक सद्भावना की देन है।[1] इस शहर के नामांकरण के संबंध में अनेक आनन्ददायक कथायें प्रचलित है। (ऐसा विश्वास किया जाता है कि पूर्व में एक प्राचीन मन्दिर रहा होगा।)बेगलर तथा कनिंघम जैसे पुरातत्वविदों ने ′′ हिलसा देव′′ तथा ′′जुम्मन यति′′ के संबंध में अनेक कथाओं का उल्लेख किया हैं। सम्प्रति भी हिलसा के कुछ लाग अपने नाम के साथ ‘देव’ लिखते है। यह भी कारण है कि ये लोग या तो हिलसा देव का वंशधर है या अनुयायियों की परम्परा में रहे हैं। यही ‘हिलसा देव’ के नाम पर इस जनपद का नाम हिलसा पड़ा।[2]

मुस्लिम संत ''जुम्मन यति'' और ''हिलसा देव'' दोनों ही अपने युग के समकालीन संत रहे हैं। ये दोनों संत एवं इनके अनुयायियों के बीच काफी संघर्ष होते रहे होंगे। ऐसा वर्णन कनिंघम ने अपनी यात्रा वृतांत के क्रम में जन साधारण द्वारा प्राप्त सुचनाओं के आधार पर उल्लेख किया है। जुम्मन यति एवं हिलसा देव के बीच संघर्ष के क्रम में हिलसा देव की हार हुई एवं जुम्मन यति की जीत हुई। जुम्मन यति हिलसा देव को मिट्टी के बहुत बड़े बर्तन में रखकर जीवित ही जमीन में गाड़ दिया।

दुसरे कथा के अनुसार कहा जाता है कि राजगृह से चलते हुए श्री कृष्ण का बड़ा भाई बलराम जिसे हलधर के नाम से जाना जाता था, हिलसा के वर्तमान काली स्थान के निकट तालाब है, जिसके किनारे अपना हल रखकर विश्राम किया था। इसी के नाम पर इस शहर का नाम प्राचीन काल में हलधरपुर था जो बाद में चलकर हिलसा के नाम से जाना जाता हैं।

महाभारत कालीन मागो की सूची में वैशाली से पाटलीग्राम तथा गारथगिरि (बराबर पहाड़) होता हुआ राजगृह तक एक मार्ग था जिसमें पाटलीपुत्र गोरथगिरि के बीच हिलसा की अवस्थिति थी।[3] सन् 1857 ई0 में सिपाही विद्रोह के समय अनेक घुड़सवार इसी मार्ग से आते–जाते रहते थे और वर्तमान राम बाबु हाई स्कुल, हिलसा के समीप अंग्रेजों के समय सेना का पड़ाव और केसरे हिन्द नामक स्थान यहीं पर था। यहाँ के सात प्रसिद्ध मुहल्ले है – काजी मुहल्ला, लोहार टोला, पठान टोल, पाठक टोला, कोइरी टोला, मादुरी टोला और सेदा बाजार है वर्तमान समय में मुहल्ले की संख्या और भी वृद्धि हुई है जैसे– देवनगर, पटेल नगर, राममूर्ति नगर, शिवनगर इत्यादी। स्पष्टतः प्रमुख जातियों और पेशेवर लोग लोगों की स्मृति में होलिका दहन का कार्य होता रहा है। उपयुक्त परिप्रेक्ष्य में हिलसा का प्राचीन और दिनानुदिन विकास की यात्रा में कई संस्कृतियाँ का समन्वय स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

यहाँ प्राचीन काल से ही एक 'अन्नपूर्णा' पुस्तकालय है, जहाँ स्वतंत्रता सेनानियों महात्मा गाँधी, और सुभाष चन्द्र बोस जैसे नेताओं के हस्ताक्षर सुरक्षित है। आज हिलसा एक अनुमण्डल मुख्यालय है जिसमे प्रशासनिक सेवाओं के साथ–साथ सरकारी अस्पताल, डिग्री कॉलेज, इंटर कॉलेज, उच्च विधालय, उपकारा, व्यवसायिक सेवा केन्द्र आदि स्थापित हो गये हैं। हिलसा के अक्षांशीय विस्तार 85^0 15' 6'' से लेकर 25^0 12' 4'' के बीच है। यहाँ की जनसंख्या 2001 की जनगणना के अनुसार 37748 व्यक्ति थी जो 2011 की जनगणना के अनुसार 51052 हो गयी है जिसमें 27055 पुरूष एवं 23997 महिलायें है।

प्रशासनिक केन्द्र होने के कारण यहाँ अनुमंडल के सभी अधिकारी रहकर अपने दायित्व का निर्वाह करते हैं। यहाँ रामबाबु उच्च विधालय का निर्माण आजादी के पूर्व 1936 में हुआ था जबकि श्री चन्द उदासीन महाविधालय की स्थापना 1952 ई0 मं हुई थी। हिलसा शहर का पूरब–पश्चिम विस्तार 3 किमी0 तथा उत्तर दक्षिण विस्तार 6 किमी0 के लगभग है। हिलसा से 44 किमी0 उत्तर पश्चिम में बिहार की राजधानी पटना तथा 30 किमी0 पूरब में नालन्दा जिला मुख्यालय बिहार शरीफ स्थित है। हिलसा अनुमंडल का सारा कार्य हिलसा से हो संचालित होता हैं।

भौगोलिक संरचना एवं धरातलीय स्वरूप :–

हिलसा मध्य गंगा के समतल मैदानी भाग में स्थित एक उपजाऊ मैदानी भाग है। यह मध्य गंगा के दक्षिणी मैदान में पड़ता है। यह एक निक्षेपात्मक मैदान हैं। दक्षिण की ओर बहने वाली नदियों से वर्षाकाल में प्रायः बाढ़ आ जाया करती है। यह पुरा का पुरा मैदानी भाग बाढ़ मैदान में स्थित हैं यहाँ की मुख्य नदी फल्गु है जो अपनी मैदान में स्थित है। यहाँ की मुख्य नदी फल्गु है जो अपनी सहायक नदियों के साथ इसी मैदानी भाग में बाढ़ के लिए प्रसिद्ध है। गंगा नदी के प्राकृतिक कगार क कारण जल का निकास तत्काल नहीं हो पाती जिसके कारण नदियों का जल पूर्व की ओर बहता हुआ मोकामा टाल जें जाकर जमा होती है और कुछ जल गंगा नदी में जाकर समा जाता है। परन्तु गंगा नदी का जलस्तर ऊँचा रहने के कारण यहाँ का पानी पूर्ण रूप से नहीं निकल पाता परिणामस्वरूप पूरे क्षेत्र में बाढ़ आ जाया करती है।

यहाँ की आन्तरिक चट्टानें परतदार है जिसमें मुख्य रूप से बालू तथा मिट्टी का अंश है। इसके कण महीन है। इन परतदार चट्टानों की मुटाई के संबंध में विद्धानों में मतभेद है। एस0 एस0 कृष्णन के अनुसार इस परत की मुहाई 14000 फीट है। सदियों से नदियों के द्वारा जमा किया गया मलवा से इस मैदानी भाग का निर्माण हुआ है। अल्डीहम महोदय के अनुसार परतदार चट्टानों के इस परत का मुटाई 7000 फीट हैं। फल्गु की सहायक नदी लोकाइन नदी है जो हिलसा से पश्चिम से होकर बहती है। यह नदी छोटे–छोटे नदो श्रोतों के रूप में मकड़ी के जाल के समान बिखरे हुए हैं।

हिलसा का दक्षिणी भाग ऊँचा है तथा उत्तर–पूर्वी भाग नीचा है। इस प्रकार यहाँ का धरातलीय भाग समरूप होते हुए भी ऊँचाई–निचाई में अन्तर है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

इसी विविधता के कारण इसके दो प्रमुख विभाग किये जा सकते हं।

1. दक्षिण–पश्चिम का उच्च भाग।
2. उत्तर–पूर्व का निम्न भाग।

1. दक्षिण पश्चिम का उच्च भाग :– इस भाग में हिलसा का शहरी क्षेत्र अवस्थित है। इसके निकट कई छोटे–छोटे गाव भी बसे हुए हैं। यहाँ क्षेत्र उच्च भू–भाग में बसे होने के कारण वर्षा के दिनों में भी पानी में नहीं डूब पाता। इसलिए वर्षा तथा बाढ़ के जल से यह क्षेत्र अक्षुण्य रहता है। यहाँ की सड़कें कुछ निचले जमीन पर अवस्थित होने के कारण बाढ़ के समय में डूब जाता है। इसी कारण सड़कों का संबंध अनुमंडल मुख्यालय से टूट जाता है।
2. उत्तर पूर्व कर निम्न भाग :– नीचली भूमि पर अवस्थित होने के कारण यह क्षेत्र मानव बसाव के लिए सर्वथा अनुपयुक्त है। वर्षा ऋतु में यहाँ पानी जमा हो जाता है। यहाँ वृक्षों की भी कमी है। अतः मिट्टि का कटाव भी बड़ी तेजी से होता रहा है। निम्न भूमि होने के कारण यहाँ अधिक मात्रा में धान की खेती होती है। कभी–कभी यह भाग वर्षा की अधिकता के कारण डूब जाता है तथा धान की बर्बादी होती है।

हिलसा में कोई बड़ी नदी नहीं है। केवल एक ही बरसाती नदी है जो बरसात के मौसम में अधिक वर्षा होने से तेजी से भर जाती है और भंयकर दृश्य उपस्थित करती है। काफी तेज धारा के कारण काफी धन–जन की क्षति होती है। इसे लोकाइन नदी के नाम से जाना जाता है। यह फल्गु की सहायक नदी है जिसका निकास गंगा नदी में है। यह नदी दक्षिण से उत्तर की ओर बहती है। गर्मी के दिनों में यह नदी पूर्ण रूप से सुख जाया करती है।

जलवायु :– भारत तथा बिहार के अन्य भागों की तरह नालन्दा जिला का यह क्षेत्र भी मॉनसूनी जलवायु के अर्न्तगत पड़ता है। यहाँ भी जाड़ा गर्मी एवं बरसात की स्पष्टतः ऋतुएँ पाई जाती है। दक्षिण–पश्चिम मॉनसुन से यहाँ जून से अक्टुबर तक वर्षा होती है। शीत ऋतु में कभी–कभी चक्रवातों से हल्की वर्षा हो जाया करती है। यहाँ जनवरी महीना सबसे ठंडा होता है। इस महीने में कभी–कभी तापमान 4^0ब तक पहुँच जाता है। गर्मी में औसत तापमान 23^0ब तथा जाड़े का औसत तापमान 10^0ब रहता है। जाड़े के दिनों में कुहासा छाये रहता है। कभी–कभी सात–आठ दिनों तक सूर्य देव का दर्शन तक नहीं हो पाता है। मई के आखिरी सप्ताह एवं जून के प्रारंभ में सबसे अधिक गर्मी पड़ती है। 15 से 20 जून तक यहाँ मॉनसून फुट पड़ता है और वर्षा शुरू हो जाती है। तब गर्मी की तपिश से आतुर लोगों को राहत मिलता है। यहाँ औसत वार्षिक वर्षा 150बड से कुछ अधिक होती है। फिर भी वर्षा की मात्रा एवं दिनों में पर्याप्त विविधता पाई जाती है। यहाँ सर्वाधिक वर्षा जुलाई एवं अगस्त महीनों में होती है।

मिट्टी – मिट्टी यहाँ के मूल चटट्ानों से निर्मित है। मिट्टी मानव का एक महत्वपूर्ण संसाधन है क्योंकि फसलों का सफल उत्पादन इसी पर निर्भर हैं। हिलसा गंगा के दक्षिणी मैदान में स्थित होने के कारण जलोढ़ मिट्टी से निर्मित है। यहाँ के क्ले मिट्टी (ब्सं`वपस) को केवाल मिट्टी के नाम से जाना जाता है। इसमें मुख्यतः 36ः बालु, 38ः शिल्ट एवं 26ः क्ले हुआ करती है। यह मिट्टी बरसात के दिनों में कुछ ही पानी सोखने पर काफी कीचड़युक्त हो जाती हैं, लेकिन सुखने पर यह मिट्टी कड़ी हो जाती है तथा फटकर इसमें दरार भी पड़ जाता है। केवाल मिट्टी काफी उपजाऊ मिट्टी है जिसमें धान, गेहूँ, मकई, आलू आदि पर्याप्त मात्रा में उपजाए जाते हैं। इसके अलावे यहाँ बाल सुन्दरी मिट्टी भी पायी जाती है। ये दोनों प्रकार की मिट्टियाँ काफी उपजाऊ होती है। इसलिए यह क्षेत्र एक प्रधान कृषि क्षेत्र में बदल गया है। इन मिट्टीयों में ह्युमस की मात्रा अधिक पायी जाती है। इसलिए इन मिट्टीयों में थोड़ा सा ही खाद एवं सिंचाई की सहायता से पर्याप्त मात्रा में फसलों का उत्पादन होता है। इसलिए नालन्दा जिला का यह क्षेत्र खुशहाल है।

प्राकृतिक वनस्पति :– किसी भी क्षेत्र के लिए प्राकृतिक वनस्पति एक महत्वपूर्ण संसाधन होता है। यहाँ मॉनसुनी प्रकार की वनस्पति पायी जाती है जो वर्ष में एक बार ग्रीष्म ऋतु के शुरूआत में अपने पत्तों को झड़ा देती है। यहाँ का मुख्य वृक्ष आम, अमरूद, महुआ, बरगद, पीपल, बाँस, शीशम, जामुन, ताड़ खजुर एवं नीम है। मुख्य कृषि क्षेत्र होने के कारण यहाँ सघन वनों का अभाव पाया जाता है। ग्रामीण क्षेत्र के आसपास छिट पुट रूप से शीशम के वृक्ष पाये जाते हैं। इन वनों के लकड़ियों का उपयोग फर्नीचर एवं घर बनाने के लिए ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में किया जाता हैं। यहीं की मुख्य सड़क के दोनों और वन के रूप में वृक्षों की प्रधानता है। पर्यावरण संरक्षण क लिए वृक्षों का महत्वपूर्ण योगदान है, इसके लिए कुल क्षेत्रफल का 33ः भाग पर वनों का विस्तार होना चाहिए। यहाँ कुल क्षेत्रफल का 20ः से भी कम क्षेत्र में वन या वृक्ष है। इसलिए यहाँ पर पुर्नजंगलीकरण (त्म.थ्वतमेजंजपवद) की आवश्यकता है।

साक्षरता :– किसी भी क्षेत्र का भविष्य वहाँ निवास करने वाले निवासियों की साक्षरता, जागरूकता

एवं विचार विमर्श करने की शैली पर निर्भर करता है। साक्षरता के दृष्टिकोण से यह क्षेत्र काफी आगे है। 1951 में यहाँ साक्षरता की दर से 30 प्रतिशत से करीब था जो बढ़कर 1991 में 67 प्रतिशत तथा 2001 में 73ः तथा 2011 में 79.05ः हो गई है। इस प्रकार साक्षरता को दर में यहाँ दिनोंदिन वृद्धि होती जा रही है। इसके परिणामस्वरूप यहाँ के लोगों के विचारों में भिन्नता के साथ–साथ वैज्ञानिक सोच में भिन्नताएँ रही है। आज यहाँ के लोग वैज्ञानिक सुझ–बुझ एवं श्रमशक्ति का प्रयोग कर कृषि से अधिक उत्पादन का लाभ ले रहे हैं। शहरीकरण में त्रीवता से वृद्धि होने के कारण विलासिता की वस्तुओं मे भी वृद्धि हो रही है। अन्य क्षेत्रों की तरह यहाँ भी ग्रामीण साक्षरता की दर शहरी साक्षरता दर से कम है। वर्तमान समय में हिलसा के ग्रामीण क्षेत्र से लोगों का पलायन शहरी क्षेत्र की ओर हो रहा है। इस प्रकार यहाँ के ग्रामीण जनसंख्या का पलायन (डवअमउमदज) गाँव से शहरों की ओर हो रहा है। इसलिए हिलसा के शहरी क्षेत्र की जनसंख्या तेजी से बढ़ है। खासकर युवा वर्ग पढ़ाई–लिखाई एवं रोजी–रोजगार के लिए हिलसा शहरी क्षेत्र में आकर बसे हैं। इसलिए यहाँ जनसंख्या की समस्या के साथ–साथ शहरी क्षेत्र में जमीन काफी मँहगी हो गई है।

हिलसा के आस–पास के ग्रामीण क्षेत्र चोर–डकैंतों के कारण काफी अशान्त रहते हैं। लोग वैसे क्षेत्र में अपने–आपकों सुरक्षित महसुस नही करते और सबकुछ छोड़कर शहर की ओर बसने चले जाते है। उग्रवाद प्रभावित नालन्दा जिला का हिलसा अनुमंडल मुख्यालय इतना प्रभावित हो जाता है कि लोग सदा के लिए गाँव छोड़कर अपना जमीन जायदाद बेचकर शहर में आवास बना लेते हैं। हिलसा अनुमंडल का चिकसौरा के आसपास का क्षेत्र काफी आतंकित रहता है। इस क्षेत्र के लोग शाम होने के बाद घर स बाहर जाने से कतराते हैं। यहाँ तक की रात में सड़कों पर वाहनों का आवागमन ठप रहता है।

<u>निष्कर्ष :–</u> निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि उपरोक्त भौगोलिक स्थिति को देखते हुए यहाँ की समस्याओं का समाधान कर दिया जाय तो नालन्दा जिला का यह कृषि प्रधान क्षेत्र एक दिन और भी अधिक आर्थिक स्थिति को मजबूत कर सकता हैं। यहाँ विधुत की सबसे बड़ी समस्या है। इसका प्रभाव सबसे अधिक सिंचाई एवं फसलों के उत्पादन पर पड़ता है। किसानों के पास हर वक्त उतनी पूँजी नहीं रहती है कि डीजल खरीदकर अपने खेतों में पटवन का कार्य कर सके। विधुत के अभाव में इस क्षेत्र के किसानों की कमर ही तोड़ देती है। ग्रामीण क्षेत्रों में विधुतीकरण के अभाव से सिंचाई का कार्य काफी बाधित हुआ है। शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र दोनों इससे प्रभावित है। बिजली ठीक से नही रहने के कारण अंधेरा का लाभ उठाकर चोर उचक्के भी लाभ उठाते रहते हैं। अतः अगर विधुत की समस्या का समाधान हो जाये तो यह क्षेत्र और भी अधिक उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर हो सकता है। लेकिन वर्तमान समय में विधुत आपूर्ति में बहुत सुधार देखी जा रही है जो हिलसा के कृषि के विकास के लिए एक बहुत बड़ा उपलब्धि मानी जा रही है। सड़क यातायात और बिजली की सुविधा हो जाने से कृषिगत फसलो का उत्पादन चरमसीमा पर है। अगर यही स्थिति आगे भी जारी रही तो हिलसा क्षेत्र नालान्दा जिला का हरियाणा साबित होगा। इसके लिए प्रशासन एवं क्षेत्रीय नेताओं को सक्रिय होने की आवश्यकता है।

<u>संदर्भ सूची</u>

1. नरेन्द्र देव पाण्डेय :– शतदल–वार्षिक पत्रिका, रामबाबु हाई स्कूल, हिलसा (1980) पृष्ठ – 54
2. नरेन्द्र देव पाण्डेय – शतदल–वार्षिक पत्रिका रामबाबु हाई स्कूल, हिलसा (1980) पृष्ठ – 55
3. **J.D. Beglar :- Archaeological Survey of India- Report of a town.**
4. **Kanigham – volume – XI Page – 163**
5. मोती चन्द्र :– सार्थवाह, पृष्ठ – 301
6. **Kumar, N:- Bihar District Gazetters, Patna, District, Secretariat Press, Gulzarbagh, Patna – 7 (1970) P.P. – 4-5**
7. **Lal, B.B. :- District Census Hand Book, Nalanda District (1981) Published by the Govt. of Bihar, Patna 1987, P.P.- 31 – 32**

RRIJM 2015, All Rights Reserved